INNOVARE JOURNAL OF SOCIAL SCIENCES

INNOVARE ACADEMIC SCIENCES
Knowledge to Innovation

Vol 4, Issue 3 , 2016 ISSN:2347-5544

Review Article

रीवा जिले म एड्स रोगियो का स्थिति

प्रीति शर्मा, अनामिका पाण्डेय, महेश शुक्ला

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा

Email-anamikapandey2283@gmail.com

Received:31 May 2016, Revised and Accepted:15 June 2016

lkjk'k

एड्स आज के युग की नवीनतम एवं सर्वाधिक खतरनाक बीमारी है। यह एक छुपी महामारी है जिसका पता कुछ वर्षों पहले लगा है। आज स्थिति यह है कि इस रोग ग्रसित व्यक्ति अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकता। यह एक संक्रामक रोग है। वर्तमान समय में ऑकड़े यह स्पष्ट कर रहे हैं कि भविष्य में जन–जीवन के लिए एक घातक समस्या बन जायेगी। इस रोग से आर्थिक एवं सामाजिक संरचना प्रभावित हो रही है।

NACP (National AIDS Control Programme) द्वारा एड्स नियंत्रण हेतु अनेक अनुसंधान, प्रचार–प्रसार, नई पहले आदि गतिविधियॉं की जा रही है। एड्स को खत्म करने के लिये कई अनुसंधान एवं संस्थान खोले गए हैं जिसके माध्यम से दवाईयों एवं सुरक्षा उपकरणों की खोज की जा रही है।

NIMS→ National

Institute of Medical Statistics Hq दिल्ली

CADR→Centre for Advanced Development Research→भोपाल

National AIDS Research Institute→ पुणे जैसे संस्थान AIDS विभाग के लिये कार्यरत् हैं।

इस शोध में एड्स को खत्म करने व इसके कारण से उत्पन्न परिणामों को जानने हेतु प्रयास किया गया है। इस शोध के माध्यम से नवीन ऑकड़े इकठ्ठे किये गये हैं।

eq[; 'kCn :-_संक्रामक रोग, प्रतिरक्षक–तंत्र, अंग–प्रत्यंग, महामारी, प्रचार–प्रसार

vo/kkj.kk

एड्स रोग विषाणु से होने वाला रोग है।

एड्स की व्याख्या→

A	→	Acquired
I	→	Immune
D	→	Deficiency
S	→	Syndrome

इस रोग को H.I.V. कहा जाता है।

HIV- Human Immune Deficiency Virus

यह बीमारी HIV नामक Virus से फैलती है। HIV विषाणु तरल पदार्थ जिसमें म्यूकस होता है के माध्यम से प्रवाहित होता है।

इस प्रवाह के प्रमुख माध्यम वीर्य, रक्त हैं। जब किसी माध्यम से HIV विषाणु हमारे शरीर में पहुँच जाते हैं तो ये रोगों से लड़ने वाली T-Cells या प्रतिरक्षक–तंत्र एवं मस्तिष्क की कोशिकाओं को नष्ट करने लगते है। T-Cells के कमजोर शरीर की आम रोगों से लड़ने की क्षमता खत्म होने लगती है और व्यक्ति कई रोगों से ग्रसित होने लगता है। एड्स से ग्रसित व्यक्ति 6–10 वर्ष तक सामान्य जीवन व्यतीत कर सकता है।

एड्स के विषाणुओं के रहने का स्थान–

1. रक्त में
2. रोगी द्वारा प्रयोग की गई सुई में
3. रोगी के अंग–प्रत्यंग में
4. रोगी के वीर्य में

jksx dk y{k.k

1. शरीर में खुजली होना
2. शरीर में घाव बनना।
3. मूँह और गले में खराश
4. शरीर में वजन का 10प्रतिशत से अधिक घट जाना।
5. एक महीने से अधिक दिन तक बुखार और खॉसी बने रहना।
6. बार–बार दस्त लगना।
7. भारी–थकान

,M~l dk QSyko

1. HIV संक्रमित रोगी से संभोग करने से।
2. संक्रमित रोगी द्वारा प्रयोग की गई सुई का प्रयोग करने से
3. संक्रमित रोगी का रक्त अन्य स्वस्थ व्यक्ति को देने से।
4. संक्रमित रोगी का अंग–प्रत्यंग किसी स्वस्थ व्यक्ति को प्रत्यारोपण करने से।

,M~l dh jksdFkke

1. HIV संक्रमित व्यक्ति द्वारा उपयोग की गई सुई का प्रयोग न करे।
2. HIV संक्रमित व्यक्ति से रक्त नहीं लेना चाहिए।
3. एड्स रोगी द्वारा काम में लाए गए बर्तन, साबुन, वस्त्र, चाकू आदि का उपयोग नहीं करना चाहिए।
4. वेश्यालयों एवं अवैध यौन संबंधी के केन्द्रों पर रोक लगाना चाहिए।
5. इंजेक्शन से मादक द्रव्यों का सेवन नहीं करना चाहिए।

88.2% → हिटरोसेक्सुअल Heterosexual
1.5% → Homosexual
1.7% → सुइयॉ
1.0% → रक्त
2.7% → शेष से AIDS संचरण की पुष्टि की गई है।

midYiuk

1. एड्स एक संक्रात्मक बीमारी है।
2. एड्स का निदान अभी तक संभव नहीं हुआ है।
3. एड्स को जागरूक होकर ही खत्म किया जा सकता है।
4. महिलाओं की अपेक्षा पुरूष ।प्क्ै रोगी ज्यादा पाये गए है।
5. एड्स गर्भवती महिलाओं से गर्भस्थ शिशु में पहुॅच रहा है।
6. एड्स से बचाव ही उपचार है, इसका पूरी तरह से निदान अभी संभव नहीं है।

rF;ksa dks bdBBk djus dh L=ksr

प्राथमिक स्त्रोत → साक्षात्कार के माध्यम तथ्यों का संकलन किया है।
द्वैतीयक स्त्रोत → प्रकाशित प्रलेख और पत्रिकाओं के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया है।

ifj.kke

यह शोध रीवा शहर में किया गया है जिससे निम्नलिखित ऑकड़े पाये गये है–

कुल रोगी	→	276
पुरूष	→	149
महिलाऍ	→	117
बच्चे	→	10

यह ऑकड़े 2014–15 में पाए गए हैं। सूचनादाताओं के अनुसार यह रोग अधिकाशंतः पुरूषों में यौन–संबंधों के कारण पाया गया है। बच्चों में यह रोग मॉ के रोगी होने के कारण पाया गया है। अधिकतम रोगी 15–45 वर्ष की उम्र के पाये गए है।

fu"d"k

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि एड्स एक संक्रात्मक बीमारी है। भारत में लगभग 20 लाख वेश्याऍ है जो कि भ्प्ट संक्रमित हैं और वे अपने ग्राहकों में इस रोग को फैला रही है ।

एड्स को रोकने के लिए कोई भी टीका, इंजेक्शन और दवा की खोज नहीं हुई है। एड्स से बचाव ही उपचार है। एड्स से बचाव बहुत आसान है यदि व्यक्ति स्वयं पर संयम रख सके। हमें मिथ्याओं से परे हटकर वास्तविकता का अध्ययन करना चाहिए एवं एड्स के बारे में फैल रही गलत धारणाओं को खत्म करना चाहिए।

lnHkZxzFk lwph

किताबे →Prof. M.L. Gupta → Sociology
Prof. D.D. Sharma → Sociology
पत्रिका →Pratigogita Darpan → (November 2013)